IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, November 2025
Impact Factor: 7.67

प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में संवेदना के आयाम

प्रो. (डॉ.) विष्णु कुमार अग्रवाल

प्रोफेसर-हिन्दी विभाग

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर

श्रीमती गिरजेश ओझा

शोध छात्रा

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सारांश

मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में जन्मे तथा सतपुड़ा एवं नर्मदा के अंचल में पले बड़े कवि प्रेमशंकर रघुवंशी (8 जनवरी 1936 से 2016) ने अपने प्राध्यापकीय जीवन के दौरान अपने अंचल के साथ गहरा रागात्मक सम्बन्ध स्थापित किया। कालांतर में यही रागात्मक संवेदना उनके गीतों और कविता में रूपायित हुई है। प्रकृति से जीवन तादात्म रखते हुए लोक जीवन को जीते हुए और सामान्य जन के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए किसी साहित्यकार या कवि की रचनाधर्मिता किस प्रकार विशिष्ट और ऊर्जावान होती है इसके साक्षात प्रमाण रूप में प्रेमशंकर रघुवंशी का काव्य संसार है। जिसमें संवेदना के विविध आयामों में वैयक्तिक संवेदना, सार्वभौमिक से लेकर राष्ट्र-चिंतनपरक आदि संवेदना का विवेचन करना है।

मुख्य शब्द — संवेदना, प्रेमशंकर रघुवंशी, कविता, सतपुड़ा, नदियाँ, प्रकृति, वैयक्तिक, मानवीय, सामाजिक, आदिवासी, धर्म के सटोरिये, अध्यात्म, राजनीति, सांस्कृतिक, राष्ट्रचिंतन, अभिव्यक्त आदि।

शोध का उद्देश्य — रघुवंशी जी ने खुली आँखों से अपने विंध्याचल, सतपुड़ा, नर्मदा अंचल में आदिकाल से निवास करते आये आदिवासियों,महिलाओं,किसानों, मजदूरों की बदहाली को देखा है। उनकी कविता ने स्थूल जगत के साथ-साथ 'तिनके' के टूटने की भी आवाज सुनी है। वर्तमान में गाँव से लेकर शहर तक का व्यक्ति कई तरह से बाह्य एवं आंतरिक रूप से पीड़ित है। उन सब की अनुभूति ही प्रेमशंकर जी के काव्य में संवेदना के विविध रूपों में प्रकट हुई है। अतः कवि रूप में उनकी संवेदनशीलता से परिचित होना।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, November 2025
Impact Factor: 7.67

प्रस्तावना —

कवि प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में- वैयक्तिक संवेदना, मानवीय संवेदना, सामाजिक संवेदना, राजनीतिक संवेदना, धार्मिक संवेदना, सांस्कृतिक संवेदना, राष्ट्र चिंतनपरक संवेदना आदि अनेक रूपों में देखने को मिलती है। एक कवि सर्वप्रथम वह संवेदनशील प्राणी होता है जो अपनी व्यक्तिगत भाव अनुभूतियों को सामाजिक दृष्टि से कविता रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। उनके सभी काव्य संग्रहों जैसे – 'आकर लेती यात्राएँ', 'पहाड़ों के बीच', 'देखो साँप तक्षक नाग', 'तुम पूरी पृथ्वी हो कविता', 'अँजुरी भर घाम', (नवगीत संग्रह) 'मुक्ती के शंख', (नवगीत संग्रह) 'पकी फसल के बीच', 'पकी फसल के बीच', 'नर्मदा की लहरों से', 'सतपुड़ा के शिखरों से', (नवगीत, गीत, जनवादी गीत, कविता संग्रह) 'देखा बिना नाम के तुम्हें', 'प्रणय का अनहद', 'नहीं रहने के बाद भी' में संवेदना मानव जीवन के हर पहलू तथा प्रकृति के हर रूप में अभिव्यक्त है।

वैयक्तिक संवेदना के रूप में कवि की निजता, आस्था, प्रेम एवं करुणा, संघर्ष व आक्रोश, विश्वास, मानव-चिन्तन तथा देश-प्रेम विशेष रूप से समाहित है। आस्थामूलक चिन्तन, एवं विसंगतियों के खिलाफ संघर्ष, सत्य के प्रति दृढ़ता, सामाजिक विद्रूपताओं के प्रति क्रोध, ईश्वरीय गुणों के प्रति गहरा प्रेम और विश्वास, सबके प्रति करुणा का भाव, हित-परहित, देश प्रेम, आदि की व्यक्तिगत सोच और सही गलत को देखने का अपना दृष्टिकोण उसमें निहित होता है। रघुवंशी जी के हृदय की करुणा एवं संवेदना के अथाह सागर में से निकली हुई कविताएँ मोती के रूप में हमारे समक्ष हैं -

"मैं चाहता कि मेरी कविताएँ
वृक्ष की ही नहीं
तिनके के टूटने की भी आवाज सुन्हें।"[1]

"प्रेमशंकर रघुवंशी विशुद्ध संवेदना के कवि नहीं, अपितु संवेदनात्मक ज्ञान के कवि हैं।"[2] अपने भावों का सूक्ष्म अवलोकन करते हुए चिन्तन मनन के पश्चात कम शब्दों में गहरी संवेदना अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रघुवंशी जी में है। उन्होंने न केवल दीन-दुखी मनुष्यों की पीड़ा को ही अभिव्यक्त नहीं किया बल्कि पर्वत, पठार, नदी, जंगल एवं धरती आदि की कारुणिक पुकार को भी अपनी वाणी प्रदान की है। तथा स्वयं एक कवि जीवन की संवेदना को 'सतपुड़ा भर का दुख' नामक कविता में जिस प्रकार प्रकट किया है वह दृष्टव्य --

"यदि पहाड़ होने से / ऊब चुके हो / तो येसा करो / प्रेमशंकर हो
जाओ तुम /मै तुम्हारी जगह पहाड़ बनने को तैयार हूँ सतपुड़ा/
इस कायान्तरण के बाद / दुखों के /जो पहाड़ टूटेंगे तुम पर/
तब यह मत कहना / कि तुम पहाड़ ही अच्छे थे / जो केवल
सतपुड़ा भर का दुख ही झेलते थे।
कवि होना / आसान नहीं है सतपुड़ा / इसलिए कि वह / दुनियाभर
की करुणा को / संवेदना के स्तर पर जीता है / तब चाहे जड़ हो या
चेतन / सभी के दुख-दर्द मिटाने के वास्ते / अमृत की खोज में /
हर वक्त गरल पीता है।"[3]

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

रघुवंशी जी के काव्य संग्रह **'देखा बिना नाम के तुम्हें'** की समीक्षा में **रमेशचंद्र शाह ने (संचरण)** के अंतर्गत लिखा है कि— **"यह जाना एक प्रीतिकर अनुभव है कि प्रेमशंकर रघुवंशी का कवित्व अपने शब्दों की मुखरता से ही परिचालित नहीं, वह साथ ही साथ उस मौन के प्रति भी संवेदनशील है जो शब्दों के बीच के अंतरालों में तथा किन्हीं भी जीवंत जीवात्माओं के बीच 'संचरित'होता है ।"**[4] अतः कवि का आत्म चिंतन सदैव प्रकृति एवं मानवता के सुन्दर विकसित होने में है। आज प्रकृति का ज्यादा से ज्यादा दोहन किया जा रहा है वह बहुत ही दुःखद है। निम्नलिखित काव्य पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं--

"अपने हाथों चुन लेते जरूरत के माफिक फूल

तो कोई बात नहीं थी

लेकिन तुमने तो पूरी डाल ही तोड़ ली"[5]

एक अन्य कविता 'लहूलुहान है नदी' शीर्षक में कवि द्वारा जिस देश में नदियों का महत्व जीवन दायिनी, पूजनीय, मोक्षदायिनी के रूप में है। आज वे ही नदियाँ स्वयं की दुर्दशा पर मुक्ति के लिए तरस रहीं हैं—

"गटरों के तेजाब से आहत

छाले पड़ी देह पर

बेशरम की झाड़ियाँ उगाए

लहूलुहान है नदी

तटों में दम नहीं कि

एड़ियाँ घिसने के पत्थर ही बचा लें

* * *

मकड़जाल से जकड़ी

आकाश ताकतीं

संज्ञा शून्य है नदी !!" [6]

मानवीय संवेदना को दृष्टिगत रखते हुए कवि ने अनेक कविताओं में मानवता, समरसता एवं परहित भावना में अपनी संवेदना अभिव्यक्त की है। मनुष्य वही है जिसमें मानवता है, इसका पाठ सदा से ही हमें पृकृति पढ़ाती आयी है लेकिन मनुष्य ने कुछ और ही विधान रच रखा है—

"सभी तरह के जीव

पीते आ रहे घाट-घाट का पानी

इसके बाद भी कभी

जूठी नहीं हुई नदियाँ"[7]

रघुवंशी जी के काव्य में सामाजिक संवेदना का आयाम बहुत विस्तृत है जिसमें जातिगत, लिंग आधारित, अमीर-गरीबी, संतान संबंधी एवं रिश्ते-नातों, में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी ही है। इसलिए उसका जीवन सामाजिक दायित्वों से भरा हुआ है। एक अच्छे सजग मनुष्य का ध्यान सदैव इस बात पर रहता है कि उसके द्वारा किये गये किसी भी कार्य का समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा या समाज द्वारा उसे स्वीकारा जायेगा कि नहीं। मनुष्य की सामाजिक

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

संवेदनओं को उसकी पारिवारिक जातिगत सोच, धार्मिक मान्यताएँ, लिंग भेद, चिंतन, आर्थिक अमीरी-गरीबी, रिश्ते-नाते, और संतान-संबंध, मुख्य रूप से प्रभावित रहते हैं। मानव किसी भी स्थिति में इन संबंधों से मुक्त नहीं रह सकता। वह चाहे अनचाहे किसी भी रूप में हो उसकी संवेदनाएँ इन संबंधों से अपने एवं परायेपन का भाव बोध ग्रहण करती रहती हैं।

भारतीय समाज की जाति व्यवस्था के अंतर्गत निम्न वर्ग पर हमेशा से ही तथाकथित सामाजिक लोगों द्वारा अब तक दुर्व्यवहार और अत्याचार कई रूपों में होते आये हैं। इसका उदाहरण कवि की एक रचना 'गाँव का पानी' नामक कविता में उनकी संवेदना अभिव्यक्त हुई है—

"भाइयो !

कभी मरना नहीं चाहिए / हमारे गाँव का पानी

किन्तु जात- पात के कारण / मत ठेल देना नीचे

जैसा कि / ठेला था / लकड़ी के ठूँसे / दे देकर/ मेरे बाबा को

पटेल ने / अपने कुएँ से पानी भरते वक्त / तब मैं बच्चा था /

और घन्टों छटपटाया था प्यास से / जगत के नीचे"[8]

सामाज की मुख्य धारा में अब तक पिछड़े आदिवासियों पर लिखी 'सतपुड़ा और उसकी बेटी नर्मदा' इस कविता में कवि की बहुत ही गहरी संवेदना प्रकट हुई है जिसकी कुछ पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं—

"इतने बड़े आसमान के नीचे

वे लोग

जो सतपुड़ा के संग साथ जन्मे थे

अपनी संतानों के साथ नंगे हैं"[9]

रघुवंशी जी ने वर्तमान समय के खोखले रिश्ते-नातों की असली सूरत को भी उजागर किया है। कि बृद्ध होने पर घर के मुखिया पिता की क्या दशा हो जाती है। आज लगभग हर घर में माँ बाप की जो स्थिती है उसका सजीव चित्रण 'मेरा बेटा' नामक कविता में किया गया है--

"मेरा बेटा मन ही मन

मेरी कीमत आँक रहा है

मुझमें उसे मुद्राओं की फसलें दिखाई देती हैं

जब कि तथ्य यह है कि मैं

ठोकरें खा-खाकर

इधर-उधर हवा के रुख पर उड़ने वाला

रद्दी कागज का एक टुकड़ा भर हूँ।"[10]

समसामयिक परिवेश में यदि देखा जाए तो राजनीति का सीधा-सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। तत्कालीन समय में राजनीतिक यथा स्थिति को समाज के सामने रखना एक साहित्यकार का धर्म होता है। राजनीति में राजनेताओं द्वारा परिवर्तन लाने, सुधार करने, देश का सर्वांगीण विकास करने, लोक लुभावने प्रलोभन देना आदि घटिया राजनीति का स्तर देखने को मिल रहा है। बात इतनी ही नहीं है सत्ताधारी पार्टी पुनः अपनी वापसी के लिए चुनाव

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, November 2025
Impact Factor: 7.67

से पूर्व योजना के रूप में जनता के खातों में रुपये डालकर चुनाव को सीधे-सीधे एक तरफा अपने पक्ष में करके लोकतंत्र और संविधान का मजाक बना रहीं हैं। सांप्रदायिकता, जातिवादिता, और क्षेत्रवाद की संकीर्णता ने राष्ट्रहित को बहुत पीछे कर दिया है। रघुवंशी जी की **'देखो साँप तक्षक नाग'** नामक (लंबी कविता, नाट्य कृति) में इन सब के वर्णन में उनकी संवेदना देखते ही बनती है। एक उदाहरण प्रस्तुत है—

"वह दिन

जरूर आयेगा फकीरा

कि, जिस दिन हम

दौलत पर बैठे

इन असुरों को

सियासत को रंडी बनाने वालों को

बच्चों के हिस्से का

दूध पी जाने वाले साँपों को

वश में करेंगे

उस दिन हम इनके ही करिश्मे दिखाते फिरेंगे

पूरे समाज में"[11]

धार्मिक संवेदना के रूप में देखा जाए तो धर्म धारणा मानव समाज में अच्छे जीवन जीने का आधार माना गया है। धर्म ईश्वरीय अथवा अलौकिक सत्ता के प्रति विश्वास, आस्था, पूजा-व्रत, नियम इत्यादि का मिला जुला रूप है। संपूर्ण सृष्टि में जहाँ भी मानव समाज एवं सभ्यताएँ रहीं हैं या जो अब भी हैं। उन सबमें धर्म किसी न किसी रूप में हमेशा से ही विद्यमान रहा है। धर्म को मूलतः जीवन में आत्मिक सुख-शांति, नैतिकबल, विश्वास प्रदान करने वाला माना गया है। जिसमें अमानवीयता, हिंसा, छल-कपट, असत्य, घृणा दुराचार आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता।

जब किन्हीं लोगों द्वारा धर्म का आवरण ओढ़कर हिंसा, अत्याचार, अनाचार आदि तरह का अधर्म किया जाता है तब मनुष्य का धार्मिक संतुलन बुरी तरह बिगड़ने लगता है।इसी समाज में रहने वाला एक साहित्यकार अपनी अंतरभेदी दृष्टि से सही और गलत को समाज के सामने रखता है।

रचनाकार प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य के अध्ययन के उपरांत यह कह सकते हैं कि उनकी धर्मगत संवेदनाओं में वर्तमान के स्वरुप को हर प्रकार से देखा व जाना परखा है कि धर्म में राजनीति किस तरह कुण्डली मारकर बैठ चुकी है। तथाकथित धर्म के पुरोधाओं द्वारा उन्हें किसी भी दिशा में हाँका जा रहा है। धर्म में व्यवसाय ने अपनी जड़ें जमा ली हैं। ज्यादातर धर्म संचालक किसी भी धर्म सम्प्रदाय के क्यों न हों धर्म के सटोरिये हो गये हैं। इन स्थानों में सुख सुविधा एवं चकाचौंध सब कुछ है पर भगवान नहीं है। कवि की एक कविता **'बिना कुछ करे धरे'** में उनकी भाव संवेदना देखने योग्य है

"आध्यात्म में लगे/ गाँव, कस्बे, नगर, महानगर / गायब है खुदा

फिर भी जारी हैं प्रार्थना / प्रतीक भर बाकी हैं देवालयों में /

विराजमान हैं आदि प्रभु सटोरियों के घर /

शिवलिंग के अखंड अभिषेक में

संलग्न हैं कलारी"[12]

DOI: 10.48175/IJARSCT-30059

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, November 2025 Impact Factor: 7.67

इसी पर आधारित रघुवंशी जी की अन्य कविता 'देखो साँप तक्षक नाग' में उन्होंने सभी धर्मों के अंदर बैठे ऐसे ठेकेदारों को जहरीले साँपों की संज्ञा दी है उनकी असलियत की पोल खोलती कुछ पंक्तियाँ अवलोकनी हैं—

"यूँ तो साँप
हरेक इलाके में पाए जाते हैं
पंजाब काश्मीर नागालैंड से मद्रास तक
और मंदिर-मस्जिद
चरच-गुरुद्वारों की पोल में भी
जहाँ पोथी-पन्ना सुनते हुए ये
दिन दूने
रात चौगुने
जहरीले होते जाते हैं।"[13]

इसी प्रकार रघुवंशी जी ने सांस्कृतिक संवेदना के रूप में नित नये होते बदलाव को भी महसूस किया और हमारे समाज पर आने वाले वक्त में पड़ने वाले दुष्प्रभावों का चिन्तन करते हुए बहुत सी कविताएँ लिखीं हैं। राष्ट्रचिंतन में कवि ने बढ़ते प्रदूषण के कारण अपने सुन्दर देश के प्रति गहरी चिन्ता प्रकट की है कि दिनोंदिन जीव-जगत संकट में घिरता जा रहा है। धरती की वेदना को कवि ने इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है -

"सूख रही नदियों की धार/ झीलों की वादियाँ /
क्या होगा लताओं की देह का / जो हरे भरे आलिंगन को आतुर हैं

प्रसव को आकुल धरती / ठंडा पसीना छोड़ती
महसूस कर रही माँ होने का अहसास
कर रही गर्भ में पल रहे / भविष्य को जन्म देने की कोशिश
यह जानते हुए भी कि--
धूल, धुआँ, राख का जखीरा लिये
घात लगाए बैठा है द्वार पर महानाश।"[14]

निष्कर्ष—

प्रेमशंकर रघुवंशी सहज सरल निश्छल मनोवृत्ति के रचनाकार हैं। बिना लागलपेट के स्पष्ट बोलना उनके व्यक्तित्व की पहचान है। उनका जीवन कर्म प्रधान रहा है। वह किसी भी समस्या, एवं घटना-दुर्घटना को देखकर उनके कारणों की तह तक जाते हैं और जिम्मेदारों को कटघरे में खड़ा करके उनसे प्रश्न करना, अपने कवि धर्म का मूल कर्त्तव्य समझते हैं। रघुवंशी जी ना केवल अपने गाँव की ही खबर रखते हैं बल्कि देश दुनिया में घटित होने वाली सामाजिक,

आर्थिक, एवं राजनीतिक घटनाओं पर पैनी नजर रखते हैं। अतः उसका विश्व परिदृश्य में मानव-जीवन, जलकर, नभचर, एवं प्रकृति पर पढ़ने वाले प्रभाव एवं दुष्प्रभाव को उन्होंने अपने काव्य में पूर्ण निष्ठा एवं निष्पक्षता के साथ बिना किसी भय के अपनी भाव संवेदना को अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची—

1. रघुवंशी, प्रेमशंकर, नर्मदा की लहरों से, दिल्ली : मेधा बुक्स, 2003, पृ.सं. 25, ISBN: 81-8166-009-9
2. रघुवंशी, प्रेमशंकर, नर्मदा की लहरों से, दिल्ली : मेधा बुक्स, 2003, समीक्षा लेख से उद्धृत, ISBN: 81-8166-009-9
3. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *देखा बिना नाम के तुम्हें*, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस 2010, पृ.सं. 114
4. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *देखा बिना नाम के तुम्हें*, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस 2010, 'संचरण' से उद्धृत पृष्ठ vii
5. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *प्रणय का अनहद*, दिल्ली: शिल्पायन 2011, पृ.सं. 87, ISBN: 978-81-89918-85-9
6. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *नहीं रहने के बाद भी*, इलाहावाद : परिमल प्रकाशन 1995, पृ.सं. 107
7. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *नहीं रहने के बाद भी*, इलाहावाद : परिमल प्रकाशन 1995, पृ.सं. 57
8. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *तुम पूरी पृथ्वी हो कविता*, इलाहावाद : परिमल प्रकाशन 1995, पृ.सं. 79
9. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *पहाड़ो के बीच*, इलाहाबाद : परिमल प्रकाशन, पृ.सं. 109
10. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *पहाड़ो के बीच*, इलाहाबाद : परिमल प्रकाशन, पृ.सं. 41
11. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *देखो साँप तक्षक नाग*, इलाहाबाद : परिमल प्रकाशन, 1993 पृ.सं. 71
12. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *प्रणय का अनहद*, दिल्ली : शिल्पायन 2011, पृ.सं. 109, ISBN: 978-81-89918-85-9
13. रघुवंशी, प्रेमशंकर, देखो *साँप तक्षक नाग*, इलाहाबाद : परिमल प्रकाशन, 1993 पृ.सं. 18
14. रघुवंशी, प्रेमशंकर, *नर्मदा की लहरों से*, दिल्ली : मेधा बुक्स, 2003, पृ.सं. 39, ISBN: 81-8166-009-9